



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	१०.३.२४	२	३-५

The Tribune

11 recommendations for kharif crop approved at agri workshop

HISAR, MARCH 8

The two-day Agriculture Officers Workshop for Kharif Season 2024 organised at the Agricultural College of the Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) concluded here.

The workshop panelists came up with 11 recommendations— include a variety of Moong MH 1762 and two varieties of fodder sorghum, including CSV 53F, HJ1514 and a hybrid variety of fodder sorghum HJH1513— for the farmers for the kharif season to increase the yield and for protection of crops against diseases.



BR Kamboj with officials at the agriculture workshop. TRIBUNE PHOTO

Vice-Chancellor BR Kamboj was the chief guest while the Haryana Agriculture and Farmers Welfare Department Additional Director Rohtash Raad was the special guest.

Kamboj said to increase the production of quality seeds of

advanced varieties, the university is entering into agreements with various government and private sector companies so that the seeds of advanced varieties developed by the university can be made available to farmers. — TNS



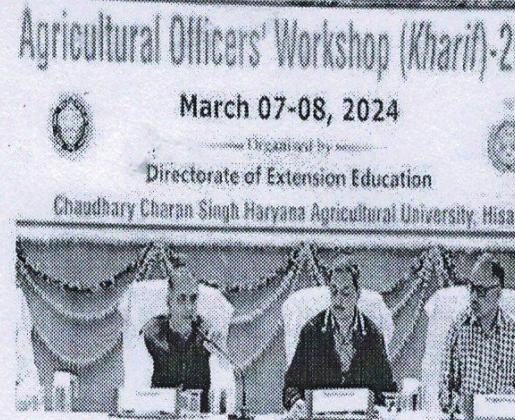
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Saver Times	09.03.2024	--	--

Two-day Agriculture Office Workshop concluded at Agriculture college of CSSHAU

Hisar: The two-day Agriculture Officer Workshop (Kharif) 2024 organized at the Agricultural College of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University concluded. The workshop was organized to finalize agricultural recommendations to increase the yield of Kharif crops and protect them from diseases. The Vice Chancellor of the University, Prof. was the chief guest in the workshop. B.R. Kamboj, while Additional Director, Agriculture and Farmers Welfare Department,

Haryana Dr. Rohtash Raad was present as a special guest in the workshop. Also on the stage, Regional Research Director Dr. Rajbir Garg and Senior Convenor of Krishi Vigyan Kendra, Mahendragarh Dr. Ramesh Yadav played the role of reporter. Chief Guest Prof. B.R. Addressing the workshop, Kamboj said that agriculture officers and extension education experts should send the overall recommendations to the farmers as soon as possible so that crop production can be increased by implementing them in the upcoming Kharif season. He said that to increase the production of quality seeds



of advanced varieties, the university is entering into agreements with various government and private sector companies so that the seeds of advanced varieties developed by the university can be made available to the

farmers as soon as possible. Referring to the problems faced in seed production in crops like jowar and millet, he said that national level seed production companies can also produce seeds of these crops in states with

favourable conditions for other crops. Because to deal with the damage caused by birds in these crops, it is necessary to grow these crops in a larger area so that seed production can be increased. He said that in the present time, there is a need to work more on varieties that are tolerant to climate change, give more production in less water and perform well in less fertile land. He also shared with everyone the feedback of the landmark varieties recently developed by the University, including RH 725 variety of mustard, which has shown good performance against diseases and adverse conditions. Additional Director, Agriculture and Farmers Welfare Department, Haryana Dr. Rohtash Raad stressed on running a large-scale awareness campaign about increasing the area under direct sown paddy in the coming Kharif season and not burning crop residues. He gave detailed information about the schemes being run by the concerned department in the interest of

farmers. Dr. Sunil Dhanda thanked everyone. The following recommendations on Kharif season crops were approved in the workshop. A variety of Moong M.H. 1762 and two varieties of fodder sorghum, including C.S.V. 53F, H.J.1514 and a hybrid variety of fodder sorghum H.J.H.1513 were included in the overall recommendations for Kharif crops. A recommendation of schedule of drip irrigation in cotton crop.0 Recommendation of integrated farming system model for one hectare in the context of climate change. Overall recommendation for growing maize as fodder crop in Kharif season.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सुमात्रार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक मार्क्युल	१३.३.२४	५	१-५

कार्यक्रम • कृषि महाविद्यालय में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हृकृति की उन्नत किस्में विपरीत हालात में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन

भारकर न्यूज | हिसार



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का सुकावर को समापन हुआ।

कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कृषि विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाएं ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ातरी की जा सकें। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने

संयोजक डॉ. रमेश यादव ने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में रिपोर्टर की भूमिका निभाई। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला में कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाएं ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ातरी की जा सकें। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने

खरीफ मौसम की फसलों पर 11 सिफारिशों स्वीकृत की

- मूंग की एक किस्म एमएच 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सीएसवी 53 एमएचजे 1514, चारे वाली ज्वार की एक हाइब्रिड किस्म एचजेएच 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारणी की सिफारिश, जलवायु परिवर्तन के परिणय में एक हेक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश।
- खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने के लिए समग्र सिफारिश की।
- सीधी बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए फिनोक्सूलम 1% + पौड़मेथलीन 24 % (पीईपीई 25 % एसई) 1000 मिली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूमत्र्खार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२१ के अंगठी	९.३.२५	२	३-५

खरीफ फसलों पर 11 सिफारिशें स्वीकृत

जागरण संवाददाता, हिसार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) के द्वारा न खरीफ फसलों पर 11 सिफारिशें की गईं। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज कार्यशाला में मुख्यातिथि के तौर पर मौजूद रहे। प्रो. काम्बोज ने कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्द किसानों तक पहुंचाएं ताकि आगामी खरीफ सीजन में फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा सके। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आग्रह 725 किस्म के बीमारियों व विपरित परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया।



मंच पर आसीन हक्कवि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज सहित अन्य। •पीआएओ

- मूंग की किस्म एमएच 1762 तथा चारे वाली ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाइब्रिड किस्म एचजे एच 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।
- कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिधी की सिफारिश
- जलवायु परिवर्तन के परिणक्ष्य में एक हैट्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली माडल की सिफारिश
- सीधी बिजित धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम एक प्रतिशत पैंडिमेथलीन 24 प्रतिशत (पीईपीई 25 प्रतिशत एसई) 1000 मिली लीटर प्रति एकड़ की दर से घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें।
- धान की फसल में घारीदार पर्ण के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए पौधों की निचली 2-3 पत्तियाँ को तोड़ने की सिफारिश।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आजीत २५ मार्च १२	९.३.२५	५	५-४

हकूमी की उन्नत किस्में विपरीत परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शनः प्रो. काम्बोज

हिसार, 8 मार्च (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया।

कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रानग के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टिंग की भूमिका निभाई। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए, कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा सके। उन्होंने कहा कि उन्नत किस्मों के गुणवत्तापूर्ण बीज के उत्पादन को



मंच पर आसीन हकूमी के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज व अन्य।

बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न सरकारी एवं निजी क्षेत्रों की कंपनियों के साथ समझौते कर रहा है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित उन्नत किस्मों का बीज जल्दी से जल्दी किसानों को उपलब्ध करवाया जा सके। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की अरण्डू 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फोउडबैक को भी सभी से साझा किया। अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धान के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। उन्होंने संबोधित विभाग द्वारा

बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1 प्रतिशत + पैंडिमेथलीन 24 प्रतिशत (पीईपीई 25 प्रतिशत एसई) 1000 मि.ली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाइ के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें। धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइक्रोइंज़ा (केमैक्स एनर्जी) की तीन बाराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छोटा विधि से छिड़काव करें। धान की सीधी बिजाइ में तना छेद कीट नियंत्रण के लिए 6 मि.ली. (3.75 ग्राम एकिटब इन्ग्रेडिएट) क्लोरोनेनिलोप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (625 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मि.ली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाइ करें। मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छट अंगामारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
अभ्यु उनाला

दिनांक
१३-२५

पृष्ठ संख्या
३

कॉलम
५-४

सेमिनार

एचएयू की मूँग की किस्म एमएच 1762, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514, एचजेएच 1513 को खरीफ के लिए स्वीकृति

कृषि अधिकारी जल्द समग्र सिफारिशों किसानों तक पहुंचाएं

माई स्टी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप दिया। इस दौरान एचएयू की मूँग की किस्म एमएच 1762, ज्वार की सीएसवी 53 एफ, एचजे 1514, एचजेएच 1513 समेत 11 फसलों की सिफारिशों की गई। मुख्य अंतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि कृषि अधिकारी जल्द समग्र सिफारिशों किसानों तक पहुंचाएं। ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करा सकें।

कुलपति ने कहा कि ज्वार व बाजरा में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य राज्यों में भी कर सकते हैं। फसलों में पक्षियों के नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में उगाना जरूरी है। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील,



एचएयू में सेमिनार को संबंधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज, साथ हैं अन्य अधिकारी। संवाद

कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता बताई। हाल ही में विकसित सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फोडबैक को सभी से साझा किया। इस मौके पर अतिरिक्त निदेशक, कृषि व किसान कल्याण विभाग, हरियाणा डॉ. रोहताश राड़, क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र महेंद्रागढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव मौजूद रहे।

कार्यशाला में खरीफ की फसलों पर सिफारिशों स्वीकृत की गई

1. मूँग की किस्म एमएच 1762 की सिफारिशों स्वीकृत की गई
2. चारे बाली ज्वार की सीएसवी 53 एफ की सिफारिशों स्वीकृत की गई
3. ज्वार की एचजे 1514 की सिफारिशों स्वीकृत की गई
4. चारे बाली ज्वार की एक हाईब्रिड किस्म एचजेएच 1513 को खरीफ फसल के लिए स्वीकृत किया।
5. कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश।
6. जलवायु परिवर्तन के परिप्रेक्ष्य में एक हेक्टेयर के लिए महेंद्रागढ़ के वरिष्ठ संयोजक डॉ. रमेश यादव मौजूद रहे।
7. समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश।
8. धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियन्त्रण के लिए 6 मिली, क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस को पानी में मिलाकर 25 मिली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सुखाकर बिजाई करें।
9. धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइकोराइजा की तीन बराबर विभाजित खुराक को निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।
10. धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियन्त्रण के लिए 6 मिली, क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल 50 प्रतिशत एफएस को पानी में मिलाकर 25 मिली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सुखाकर बिजाई करें।
11. मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियन्त्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

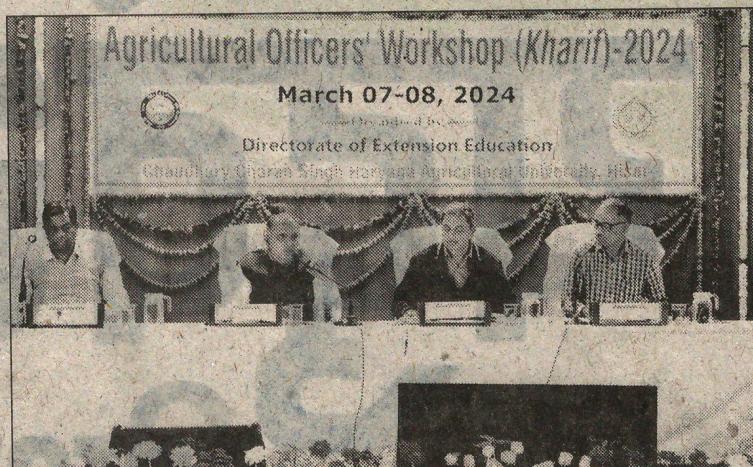
सम्बन्धित पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दृष्टि : भूमि	१०.३.२५	१२	२-५

दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का हुआ समापन

एचएयू की उन्नत किस्में विपरीत परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज

कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया।

हरियाणा न्यूज ► हिसार



हिसार। मंच पर आसीन हक्किंग के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज सहित अन्य।

फोटो: हरियाणा

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन शुक्रवार को हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज रहे, जबकि कृषि व किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रोहताश राहड़ कार्यशाला में विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। साथ ही मंच पर क्षेत्रीय अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग एवं कृषि विज्ञान केंद्र, महेंद्रगढ़ के विष्टि संयोजक डॉ. रमेश यादव ने रिपोर्टर्य की भूमिका निभाई।

मुख्य अतिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि कृषि अधिकारी एवं विस्तार शिक्षा विशेषज्ञ

समग्र सिफारिशों को जल्दी से जल्दी किसानों तक पहुंचाए ताकि आगामी खरीफ सीजन में उन्हें लागू करवाकर फसल उत्पादन में बढ़ातरी की जा सके। उन्होंने ज्वार व बाजरा जैसे फसलों में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकते हैं, क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र में इन फसलों को उगाना जरूरी होता है ताकि बीज

उत्पादन बढ़ाया जा सके। विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आरएच 725 किस्म के बीमारियों व विपरीत परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फीडबैक को भी सभी से साझा किया। कृषि व किसान कल्याण विभाग के अतिरिक्त निदेशक डॉ. रोहताश राहड़ ने आने वाले खरीफ सीजन में सीधी बिजित धन के अंतर्गत क्षेत्रफल बढ़ाने व फसलों के अवशेष न जलाने के बारे में बड़े स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने पर बल दिया। डॉ. सुनील ढांडा ने सभी का धन्यवाद किया।

कार्यशाला ने भारी लोटन की छत्ती पर 11 डिपार्टमेंट्स की

■ मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सीएसवी 53 एच, एचजे 1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाइड्रिड किस्म एचजे 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।

■ कपास की फसल में टपका सिंचाई की सम्पर्क-सारिणी की सिफारिश, खरीफ सीजन में मकाकों को चारे की फसल के रूप में उगाने के लिए समग्र सिफारिश।

■ धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 फिलोग्राम माइक्रोइंजेक्शन (फैमेल एणर्जी) की तीन बाराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालीयों निसरने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छींटा विधि से छिड़काव करें।

■ धान की सीधी बिजाई में तना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मिली (3.75 ग्राम एकिटट इनग्रीडिएट) क्लोरोनट्रैनिलोप्रोल 50 प्रतिशत एफएस (225 ग्राम प्रति लीटर एफएस) (त्रिमित्रिअ) को पानी में मिलाकर 25 मिली घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें।

■ मक्के की फसल में धारीदार पर्ण एवं पार्टिल्ड अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
पंजाब के सरी

दिनांक
१३.२५

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
१-५

कार्यशाला में खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने व बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को दिया अंतिम रूप



मंच पर आसीन हकूमि के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज सहित अन्य।

- दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला का हुआ समापन
- हकूमि की उन्नत किट्टनोंविपरित परिस्थितियों ने भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज

हिसार, ८ मार्च (ब्लूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय में आयोजित दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) 2024 का समापन हुआ। कार्यशाला का आयोजन खरीफ फसलों की पैदावार बढ़ाने और उनको बीमारियों से बचाने वाली कृषि सिफारिशों को अंतिम रूप देने के लिए किया गया। कार्यशाला में मुख्यातिथि के रूप में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज रहे, जबकि अतिरिक्त निदेशक, कृषि विभाग कल्याण विभाग, हरियाणा डा. रोहताश राड़ ने आने वाली फसलों में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकते हैं क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए नुकसान से निपटने के लिए बड़े क्षेत्र

में इन फसलों को डगाना जरूरी होता है ताकि बीज उत्पादन बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशील, कम पानी में अधिक उत्पादन देने वाली व कम उपजाऊ भूमि में अच्छा प्रदर्शन करने वाली किस्मों पर और अधिक काम करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा हाल ही में विकसित लैंडमार्क किस्में जिसमें सरसों की आर.एच. 725 किस्म के बीमारियों व विपरित परिस्थितियों में अच्छे प्रदर्शन के फोडबैक को भी सभी से साझा किया।

उन्होंने ज्वार व बाजरा जैसे फसलों में बीज उत्पादन में आने वाली समस्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर की बीज उत्पादन कंपनियां इन फसलों का बीज उत्पादन अन्य फसल के अनुकूल परिस्थितियों वाले राज्यों में भी कर सकते हैं क्योंकि इन फसलों में पक्षियों द्वारा किए गए विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

कार्यशाला में खरीफ मौसम की फसलों पर 11 सिफारिशों स्वीकृत की गई

◇ मूंग की एक किस्म एम.एच. 1762 तथा चारे वाली ज्वार की दो किस्में, जिसमें सी.एस.वी. 53 एफ, एच.जे. 1514 एवं चारे वाली ज्वार की एक हाइब्रिड किस्म एच.जे.एच. 1513 को खरीफ फसलों की समग्र सिफारिशों में शामिल किया गया।

◇ कपास की फसल में टपका सिंचाई की समय-सारिणी की सिफारिश।

◇ जलवायु परिवर्तन के परियेक्ष्य में एक हैक्टेयर के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल की सिफारिश।

◇ खरीफ सीजन में मक्का को चारे की फसल के रूप में उगाने हेतु समग्र सिफारिश।

◇ सीधी बिजित धान में मिश्रित खरपतवार नियंत्रण के लिए पिनोक्सूलम 1 प्रतिशत प्लस पेंडिमेथीलीन 24 प्रतिशत (पी.ई.पी.ई. 25 प्रतिशत एसई) 1000 मि.ली प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोल बनाकर बिजाई के 0 से 3 दिन बाद नम मिट्टी में छिड़काव करें।

◇ धान की फसल में फुटाव व उपज बढ़ाने के लिए 4 किलोग्राम माइक्रोराइजा (कैमैक्स एनर्जी) की तीन बराबर विभाजित खुराक को रोपाई के 15 दिन बाद, फुटाव और बालियां नियमने की अवस्था पर प्रति एकड़ की दर से छीटा विधि से छिड़काव करें।

◇ धान की सीधी बिजाई में ताना छेदक कीट नियंत्रण के लिए 6 मि.ली. (3.75 ग्राम एक्ट्रिव इनग्रेडिएट) क्लोरोरेट्रिनीलोप्रोल 50 प्रतिशत एफ.एस. (625 ग्राम प्रति लीटर एफ.एस.) (लुमिविआ) को पानी में मिलाकर 25 मि.ली. घोल को प्रति किलो बीज की दर से उपचार करने के बाद छाया में सूखाकर बिजाई करें।

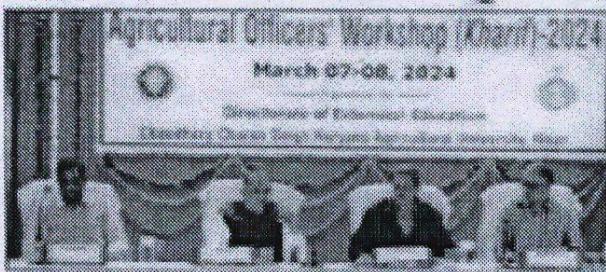
◇ मक्के की फसल में धारीदार पर्ण व पर्णच्छद अंगमारी रोग के नियंत्रण को प्रभावी बनाने के लिए 30-35 दिन पुरानी फसल में पौधों की निचली 2-3 पत्तियों को तोड़ने की सिफारिश।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाईम्स न्यूज	08.03.2024	--	--

हकूमी की उन्नत किस्में विपरित परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. बी.आर काम्बोज
दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का हुआ समापन



चिंगार टाइम्स न्यूज़
दिल्ली : वैष्णवी चरण मिशन
इंडिपेंडेंस कॉर्प द्वारा संचालित एक
कृषि प्रशिक्षणालय में आयोजित
एक दिवसीय कूर्स अधिकारी
कार्यशाला (खाली) 2024 का
समाप्ति दूसरा। कार्यशाला का
आयोजन युवीक भवनीय और
दिल्ली बहाने और उनकी
वैशिष्ट्यों में बहाने जाती है।
विशिष्टताओं को अधिक रूप देने के
लिए किंवदं यह कार्यशाला में

भूमिका निर्भर।
मुख्यालयीय प्री. औ. अम. आमदोष
ने वार्षिकता की संकेतित बहसे
पूर्ण करा कि व्यापी अधिकारी एवं
विमान विद्युत विभाग समाज
विकासीयों को जल्दी से जल्दी
विकासी एवं पृथिवी ताजि
आगमी व्यापी सीजन में इन
सभी करवाकर वास्तव उत्तमतम्
कर्त्तव्यों को जा सके। उक्ताले
कहा कि उच्च विकासी के
पृथिवीय व्योजन के उत्तमतम् की
बहने के लिए विद्युतिकालव
विभाग समाजी एवं विद्युती
की कांगड़ीयों के साथ यहाँसे
कर रहा है लालिक विद्युतिकालव
इया विकासी उच्च विकासी का
वीज जल्दी से जल्दी विकासी को
उत्तमतम् करवाया जा सके।
उन्होंने ज्ञान एवं ज्ञान की दैय

में शुरूएक मीलमध्य की
पर निर्दिशित 11
मील भविष्यत की गई
को एक विस्त एवं एक
चारे बातों ज्ञान की
विस्तरी वह एक वो 53
प्रक्रिया 1514 एवं चारे
बात को एक हालिया
एवं वेष्ट 1513 को
फ्रान्सीस की भवित
वाई में शामिल किया

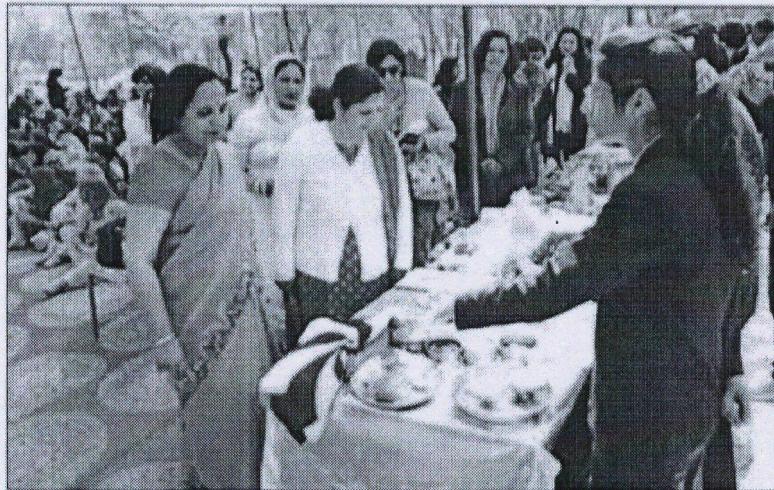
को फ्रान्स में धारेटर
परिवर्तन और अपारी गोप
को उभावी बनाने के
35 दिन पुरानी फ्रान्स
की विचारी 2-3 परिवर्त
दाने को विकाराता।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	08.03.2024	--	--

सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा को साबित किया है : संतोष कुमारी



पांच बजे ब्लूज़

हिसार। सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है। महिलाओं के उद्यमी और प्रगतिशील स्वभाव के कारण वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत और प्रयास कर रही हैं। महिलाओं ने अपनी क्षमताओं का सबूत दिया है। ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान, कौशल, जागरूकता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास में परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। सरकार की विभिन्न योजनाओं और पहलों के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की विधि में सुधार देखा जा रहा है। ये विचार चौथरी चरण

सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैपस स्कूल की निदेशिका संतोष कुमारी ने कहा। वे गांव धासू में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आयोजित ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम के समाप्तन पर बतौर मुख्यालिथि संबोधित कर रही थी।

इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठाता डॉ. बीना यादव ने बताया कि इस मासिक कार्यक्रम में प्रत्येक छात्रा ने कम से कम तीन परिवारों में व्याख्यान, प्रदर्शनी, रेली, समूह चर्चा आदि जैसे विस्तार तरीकों का उपयोग करके भोजन पोषण, संसाधन प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, कपड़े निर्माण और अलंकरण, बच्चों की देखभाल,

गर्भवती और स्तनपान करने वाली महिलाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं से आत्मान किया कि अब समय बदल गया है कि उन्हें न केवल किसी भी कार्यक्रम में लाभार्थी के रूप में भाग लेना चाहिए, बल्कि योजना और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। कार्यक्रम में पौटिक व्यंजन, बाजार के उत्पाद, वस्त्र की कढ़ई अथवा पन सामग्री सहित गांव की पारंपरिक वस्तुओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका मुख्यालिथि ने अवलोकन किया। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को मुख्यालिथि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि सुरजीत सिंह, स्कूल प्राचार्य माहनलाल बैनीवाल, भारी संख्या में महिलाएं, जिला परिषद, पशु चिकित्सालय, ब्लॉक समिति एवं ग्राम पंचायत के सदस्य, युवा संगठन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के ग्राम स्तरीय अधिकारी, महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहित अन्य शामिल हुए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	08.03.2024	--	--

दो दिवसीय कृषि अधिकारी कार्यशाला (खरीफ) का हुआ समापन

हकूमी की उश्त किस्में विपरित परिस्थितियों में भी कर रही अच्छा प्रदर्शन : प्रो. काम्बोज

卷之三

हितापार। ये एक वास्तविक सिंगल इनिशियाल पूर्ण विभागीय उत्तमता के कुमि भवित्वान्वय में अद्वितीय हो दिया गया है। असंख्यक अधिकारी वर्ष 2024 (छठक) 2024 का समर्पण हुआ। वर्ष 2024 का अपेक्षित खर्च एक वर्षावाही की वैदिकता बढ़ाने और उनको अधिकारीयों से वर्षावाही कार्य के लिए विभागीयों को अद्वितीय अवसरों के लिए विधाया रखा। कामयावता में प्रमुखतावापि के सभा में विभागीय उत्तमता के विवरणीय हो, जैविक, कामयोजन से, असंख्य अद्वितीय निवेशक, पूर्ण विकास का व्यवस्था विकास, दीर्घायामी दृष्टि, विवाह सह कामयावता में विभागीय अद्वितीय के सभा में वैदेशी रहा। सभा ही एक वर्त विभागीय अनुसारण निवेशक वार्ता, वार्षिक गर्व एवं कुमि विभाग के द्वारा, महोद्योग के विभागीय विभागों के द्वारा विभाग विभागीय की भूमिका नियमित।

पुस्तकालय द्वारा, बी. एस. कल्याणगंगा ने

पूर्ण अधिकारी पांच विवाह लिख निशेष
सभ्य विवाहितों को जाती है अल्पी विवाहने
गए पहुँचाए तक अपारी व्यवस्था दीवाने में
उन्हें सब करकरा करत उत्तराधित में
बदलती है जो भी।

उन्होंने कहा कि उजल विमानों के प्रयोगसाधारण भी है कि अमरां और बद्धाने के लिए विश्वविद्यालय इन्हें यात्रा करने पर्याप्त गतियां देनी चाहिए जो विद्यालय के सभी यात्राओं का रख है ताकि विश्वविद्यालय द्वारा विकासित उजल विमानों का भी उपयोग हो सके।

किसानों को उत्तम फलावधि या संकेत उत्तमी जहर या बायोटा वैसे प्रयोगों में शीर्ष उत्तमाधार में अनेकानी सामग्रियों का गिरफ्तार हुआ जाता है। इन द्वारा की शीर्ष उत्तमाधार क्षमताहीन हुए प्रयोगी वह शीर्ष उत्तमाधार अन्य फलावधि के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं वही का लकड़ा है। क्योंकि इन फलावधियों में पर्याप्त दुष्प्रभाव या नुकसान से जिक्रने के लिए वही छोड़ दिए हुए प्रयोगों की गतिशीलता दोगुने है। अतः शीर्ष उत्तम

वहाँ तक जा सके। उन्होंने कहा कि वर्षापान
समय में जलवायन परिवर्तन के दृष्टि सामने लाइ,
जब यहाँ में अंतिम उपाय होने वाली ब

कम उम्मीद भूमि में अच्छा पुरुषरूप करने
वाले हैं जिन्होंने पर और अधिक काम करते हैं तो
उनका सम्प्रभव बढ़ता चलता है। उन्होंने विश्वविद्यालय
द्वारा दाखिल ही हो विश्वविद्यालय के विद्यार्थी
जिसमें साधारण की आठवें 725 किलम के
विनाशीलीय व विभिन्न वर्गीकरिताएँ हैं तो अपने
प्रदर्शन के फैसलावेक को पौरी समीक्षा से साझा
किया।

अतिरिक्त निदेशक, कृषि व विज्ञान
विभाग, अधिकारी डॉ. शीराज हाज ने
उन्हें बड़े सुरक्षा लोगों में संदर्भ मिलाया था।
जो अपनी सेवाएँ बढ़ावे व प्रदान की
कामयात्रा व अपने के बहरे में बढ़े सहर पर
विभाग के अधिकारी चलने पर आग दिया।
उन्होंने अधिकारी विभाग द्वारा किया है कि डॉ.
शीराज जा रही वीजनकारी की विज्ञानात्मक
कामकाजी है। डॉ. युक्ति राज ने राहीं का
विवरण किया।

कार्बोनात्र में एक और सब की के ० से ३ रिं वाले कप मिट्टी में लिहाजार फलाने पर नियमित ११ मिक्रोपिंग करते।

- मों की एक किस्म प्रमाण्य, 1762
मा यांत्रिकी ज्ञान की दो किस्में, जिनमें
से प्रमाण्य, वे, 53 एक, एवं जे, 1514 एवं यह
यांत्रिकी ज्ञान की एक सर्वाधिक किस्म
एवं जे, एवं 1513 को युरोप फ्रान्स वै रही
जानकारीमें शालित किया गया।

- कर्मसु भी कर्मसु में द्रवका सिंहार्द्ध चर्चा वापास-वापासी वाली विविधता
- ग्रन्थान्तर परिवर्तन के परिक्षेप में एक विवरण है कि इस सिंहार्द्ध कुपी उत्तरार्द्ध मध्यस्थी विविधता

- अहंकार स्वेच्छा में यात्रा को बाहर यही प्रयत्न के का मैं उपाये हेतु साधा विकल्प

- सीधी विविध पान मैट्रिस उत्पादन
नियन्त्रण के लिए विवेचन्यम 1 वर्षीया
वेटमेट्रेटर्स 24 प्रतिमिनट (प्रीहार्ड 25
प्रतिमिनट प्रारंभ) 1000 मिली ग्रॅम उत्पादन की
जाति में 100 वर्षों के लिए विविध विविध

- यात्रा की परियोग में कुटुम्ब व उपज वहाँने निर. 4 विदेशीय पदकोषणता (वैदेशीय गतिही) की सौंध कामय विभागित पुस्तक की समर्पण के 15 दिन बाद, कुटुम्ब और वृक्षालय समिति द्वारा अवश्यक पर जूँड़ी थीकृति दर के लिए विधि से विवरणित है।

- यह की सेवा किंवद्दन में जल उत्तरकोटि नियन्त्रण के लिए 6 मिली. (3.75 प्रमाणित किलो इक्विविट) कार्बोड्यूलेशन 50 मिलिकॉ एसएस (625 प्रमाणित किलोप्रमाण) (एक्सिविट) की पार्श्व में नियन्त्रक 5 मिली. यह की प्रति किलो बीज की दर 1 अरबा करों के बाद छापा में सुखावाद दर्ज की गयी।

- प्रकार की वस्तु में खाइदा पर्यंत एवं लिपिभूषण औपरी हो। के विवरण वही उपलब्ध हैं जोने के लिए 30-35 दिन पहली वस्तु में दृष्टि की विकारी 2-3 अलिंगी जो सेवन परीक्षा



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाईम्स न्यूज	08.03.2024	--	--

सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा को साबित किया है : श्रीमती संतोष कुमारी हक्कवि द्वारा ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव का समापन समारोह आयोजित



चिराग टाईम्स न्यूज

हिसार। सभी बाधाओं के बावजूद महिलाओं ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है। महिलाओं के उद्यमी और प्रगतिशील स्वभाव के कारण वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पूरी मेहनत और प्रयास कर रही हैं। महिलाओं ने अपनी क्षमताओं का सबूत दिया है। ऐसे कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के ज्ञान, कौशल, ज्ञानरूपता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास में परिवर्तन लाने के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। सरकार की विभिन्न योजनाओं और पहलों के फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति में सुधार देखा जा रहा है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कैंपस मुक्त की निदेशिका संतोष कुमारी ने कहे। वे यांव धान्सू में इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय द्वारा

आयोजित ग्रामीण कृषि कार्य अनुभव कार्यक्रम के समापन पर बतार मुख्यातिथि मंबोधित कर रही थी।

इंदिरा चक्रवर्ती गृह विज्ञान महाविद्यालय की अधिकारी डॉ. बीना यादव ने बताया कि इस मासिक कार्यक्रम में प्रत्येक छात्र ने कम से कम तीन परियोगों में व्याख्यान, प्रदर्शनी, रैली, समूह चर्चा आदि जैसे विस्तार तरीकों का उपयोग करके भोजन पोषण, संसाधन प्रबंधन, अपर्शष्ट प्रबंधन, कपड़े निर्माण और अलंकारण, बच्चों की देखभाल, गर्भवती और स्तनपान करने वाली महिलाओं के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने ग्रामीण महिलाओं से आह्वान किया कि अब समय बदल गया है कि उन्हें न कबल किसी भी कार्यक्रम में लाभार्थी के रूप में भाग लेना चाहिए, बल्कि योजना और कार्यान्वयन में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

कार्यक्रम में पौष्टिक व्यंजन, बाजार के उत्पाद, चरब की कड़ी अध्यापन सामग्री सहित यांव की पारंपरिक वस्त्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई, जिसका मुख्यातिथि ने अवकाश किया।

कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने रासारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट योगदान देने वाली महिलाओं को मुख्यातिथि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर सरपंच प्रतिनिधि सुरजोत सिंह, मुक्त प्राचार्य मोहनलाल बैनोबाल, भारी संख्या में महिलाएं, जिला परिषद, पश्चि चिकित्सालय, ब्लॉक समिति एवं ग्राम पंचायत के सदस्य, युवा संगठन, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के ग्राम स्तरीय अधिकारी, महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाएं, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहित अन्य शामिल हुए।